जौनपुर जिले के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

विशाल कुमार गुप्ता[1];डॉ. सुशील कुमार गुप्ता[2]

[1]शोध छात्र - राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर-प्रदेश

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा संकाय - राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर-प्रदेश

Corresponding Author Email: vishalgkkt@gmail.com

सारांश—आधुनिक समाज में शिक्षित छात्र एवं छात्राओं की भूमिका पिछड़ी जाति का प्रश्न अब स्पष्ट हो जाता है क्योंकि देश के विकास कार्यक्रमों का भार अब इन पर ही है। राष्ट्र के युवक और युवतियों को शिक्षित करके ही हम राष्ट्र के कल्याणकारी, प्रजातांत्रिक, समाजवादी मूल्य का विकास कर सकते हैं क्योंकि यही युवक और युवतियाँ बच्चों में अच्छी आदतों का निर्माण, स्वस्थ मानसिक विकास तथा उनमें लोकतांत्रिक नागरिक गुणों का विकास कर सकते हैं। इन्हीं गुणों से ही बालक का सर्वांगीण विकास होगा। परम्परागत समाज में पिछड़ापन, रूढ़िवादिता, प्राचीन मूल्य तथा जीवन शैलियों का प्रचलन रहा है। भारत जैसे विशालकाय विकासशील राष्ट्र में परम्परागत सामाजिक पद्धति से काम नहीं चलेगा क्योंकि अंधविश्वास, रूढ़ियाँ आधुनिकता के बाधक तत्व होते हैं। इसलिए समाज तथा देश के हित के लिए पिछड़ी जाति के छात्रों को शिक्षित, प्रशिक्षित करके इनमे आधुनिक सामाजिक मूल्यों की स्थापना करनी होगी। जिससे राष्ट्र को परम्परागत सामाजिक तथा सांस्कृतिक कुरीतियों से बचाया जा सके। इसको बदलते हुए सामाजिक व्यवस्था तथा भावी माँगों को ध्यान में रखते हुए जरूरी मूल्यों, शिक्षा का चयन करना होगा ताकि सामाजिक क्रान्ति का रूप न ले सके। इसलिए जब तक समाज का पिछड़ा वर्ग आधुनिक दृष्टिकोण नहीं अपनाता तब तक यह सामाजिक मूल्य खरें नहीं उतरेंगे। इसके लिए आवश्यक है कि समाज के पिछड़े वर्ग के छात्रों को नवीन पाठ्यक्रमों के माध्यम से

आधुनिकता सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाए। जिससे वह अपनी शारीरिक, मानसिक क्षमता का उपयोग समाज तथा राष्ट्रहित में कर सके।

I. प्रस्तावना

भारतीय समाज में जहां परंपरा और आधुनिकता दोनों का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है, वहां छात्रों की मानसिकता और दृष्टिकोण में भी आधुनिकता के प्रति विविधता पाई जाती है। आधुनिकता एक ऐसी अवधारणा है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं में बदलाव और प्रगति का प्रतीक है। यह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का सूचक है, जो व्यक्तियों के जीवन में नई सोच, दृष्टिकोण, और कार्यशैली को जन्म देती है।

छात्र जीवन वह समय होता है जब व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्माण होता है और उसके दृष्टिकोण का विकास होता है। इसलिए, यह जानना महत्वपूर्ण है कि छात्र किस प्रकार आधुनिकता को देखते हैं, और यह उनके जीवन, शिक्षा, और भविष्य की दिशा को कैसे प्रभावित करती है। छात्रों का आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का मापन विषय के अंतर्गत, यह अध्ययन किया जाएगा कि छात्र किस हद तक आधुनिकता को अपनाते हैं, और इसके प्रति उनके विचार, विश्वास और दृष्टिकोण क्या हैं।

परिवर्तन के संदर्भ में आधुनिकता को एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है, जो विभिन्न जातियों और समुदायों में भिन्न-भिन्न मात्रा में प्रकट होती है। आधुनिकता का आधार बौद्धिक और तार्किक जीवनशैली है। भारतीय संदर्भ में, पश्चिमी देशों के अनुकरण को स्वीकार करना आधुनिकता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संक्रमण कहलाएगा। जब कोई समाज आधुनिकता की ओर अग्रसर होता है, तो उसमें तार्किकता, नवीनता, समायोजन, बौद्धिक क्रांति, और वैज्ञानिकता जैसे तत्व दिखाई देने लगते हैं। आधुनिकता का तात्पर्य एक प्रवृत्ति के रूप में परंपरागत मान्यताओं और नियमों के खिलाफ एक नवीन बौद्धिक और तार्किक जीवनशैली से है, जो सशक्त राष्ट्रों में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, और व्यवहारिक रूप में प्रकट होती है। इस प्रकार, आधुनिकता पुराने के विरुद्ध नवीनतम का संघर्ष है, जिसमें विज्ञान, तर्क, और बुद्धि प्रमुख अस्त्र हैं। मानव जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आधुनिकता का ही परिणाम है।

आधुनिकता विकास की एक प्रक्रिया है, जिसमें बौद्धिकता, तार्किकता, और वैज्ञानिकता का समावेश होता है। यह कृषि, भोजन, वस्त्र, भाषा, व्यवसाय और रहन-सहन जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि आधुनिकता पश्चिमीकरण का पर्याय है, लेकिन इसे आधुनिकीकरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संक्रमण के रूप में देखा जाना चाहिए। जब कोई समाज आधुनिकता की ओर बढ़ता है, तो उसमें तकनीकी विकास, वैज्ञानिकता, तर्कशीलता, और जनतांत्रिक नेतृत्व जैसी विशेषताएं दिखने लगती हैं।

यह परिवर्तन समाज के विभिन्न पहलुओं के लिए लाभकारी सिद्ध होता है। यदि कोई परिवर्तन विश्व की भलाई के लिए है, तो उसे आधुनिकता के रूप में चिन्हित किया जा सकता है। समाजशास्त्रियों और विद्वानों के अनुसार, पुरातन और नवीनतम के बीच की साम्यावस्था को आधुनिकता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

योगेन्द्र सिंह, "सांस्कृतिक अनुक्रिया के एक विशेष रूप में आधुनिकीकरण वह अवधारणा है जिसमें मुख्य रूप से सर्व व्यापकता तथा विकास के लक्षण विद्यमान होते हैं ये लक्षण अतिमानवता तथा सजातीयता से परे वैचारिक रूप में होते हैं। वास्तव में आधुनिकीकरण के तत्वों की ग्राह्यतापरम्परा में होती है।परम्पराओं के अन्तर्गत परिवर्तन सम-विकास के रूप में न होकर विषम विकास के रूप में होते हैं तब इस स्थिति को हम आधुनिकता कहते हैं"।

पीटर बर्जर, "आधुनिक समाज व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कुछ ऐसी गारंटी करता है कि इस समाज में जीने वाला आधुनिक व्यक्ति अपने आपको पारम्परिक समाज में जीने वाले लोगों से अलग समझता है। आधुनिक व्यक्ति जो सामाजिक भूमिकाओं एवं संस्थाओं की पारम्परिक सूचनाओं से अपने आप को मुक्त कर चुका है, एक नग्न व्यक्तित्व की तरह होता है जो संस्थागत भूमिकाओं से स्वतंत्र है।"

II. अभिवृत्ति

अभिवृत्ति या दृष्टिकोण से हमारा तात्पर्य साधारण बोलचाल की भाषा में किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति विशेष प्रकार के कुछ स्थायी विचारों से होता है। अभिवृत्ति में रुचि, अरुचि, अच्छा, बुरा अनुकूल, प्रतिकूल आदि सभी प्रकार के संवेग शामिल होते हैं। यह वह मापदंड होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति के निर्माण में सामाजिक तथा मानसिक गुणों का समावेश होता है अभिवृत्तियों का क्षेत्र तथा स्वरूप बहुत विस्तृत होता है इस परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञानियों तथा विद्वानों के विभिन्न दृष्टिकोण है-

फ्रिमैन, "अभिवृत्ति के लिए परिस्थितियों,व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने की स्वाभाविक तत्परता है जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग बन गया है"।

रैमर आदि, "अभिवृत्ति द्वारा गठित एक मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति धनात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने की संवेगबद्ध प्रवृत्ति होती है"।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर अभिवृत्ति की निम्नलिखित विशेषतायें होती है।

1. अभिवृत्ति का सम्बन्ध किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, योजना आदि से होता है।
2. अभिवृत्ति सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकती है।
3. अभिवृत्ति अनुभव के द्वारा विकसित होती है।
4. यद्यपि अभिवृत्ति पर्याप्त रूप से स्थाई प्रकृति की होती है फिर भी समय-समय पर इसमें परिवर्तन संभव है।
5. अभिवृत्ति के विकास में प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
6. अभिवृत्ति व्यक्तिगत होती है अर्थात किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति विभिन्न व्यक्तियों की अभिवृत्ति में पर्याप्त अन्तर हो सकता है।

III. पिछड़ी जाति

इसके अन्तर्गत आने वाली जातियाँ अधिकतर आर्थिक और शैक्षिक रूप में पिछड़ी होती है। शासनादेश संख्या **–1708/64–1–98**, दिनांक **5** नवम्बर **1998** द्वारा अन्य पिछड़े वर्ग की अनुसूची –एक में **70** जातियों / उपजातियों को शामिल करने की सूचना की गई है। वर्तमान में पिछड़े वर्ग की अनुसूची में नई जातियों को भी शामिल किया गया है।

IV. ग्रामीण

ग्रामीण क्षेत्र का अर्थ है ऐसे क्षेत्र जो शहरी क्षेत्रों से अलग होते हैं और जिनमें अधिकतर आबादी कृषि और पशुपालन जैसे पारंपरिक व्यवसायों में लगी होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर कम जनसंख्या घनत्व, कम विकास और कम सुविधाएं होती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों की कुछ विशेषताएं हैं-

1. कृषि और पशुपालन पर निर्भरता।
2. कम जनसंख्या घनत्व।
3. कम विकास और आधुनिक सुविधाओं की कमी।
4. पारंपरिक जीवनशैली और संस्कृति।
5. अधिकतर आबादी गांवों में रहती है।

ग्रामीण क्षेत्रों का विकास और सुधार करना एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिससे इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवनशैली और आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।

V. नगरीय

नगरीय क्षेत्र का अर्थ है ऐसे क्षेत्र जो शहरों या नगरों में स्थित होते हैं और जिनमें अधिकतर आबादी शहरी जीवनशैली के अनुसार रहती है। नगरीय क्षेत्रों में आमतौर पर उच्च जनसंख्या घनत्व, आधुनिक सुविधाएं और विकास की उच्च दर होती है।

नगरीय क्षेत्रों की कुछ विशेषताएं हैं-

1. उच्च जनसंख्या घनत्व।
2. आधुनिक सुविधाएं जैसे कि बिजली, पानी, सड़कें और संचार सुविधाएं।

3. विभिन्न प्रकार के व्यवसायों, उद्योगों और सेवाओं की उपलब्धता

4. उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता।

5. विकास की उच्च दर और आधुनिकीकरण।

नगरीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को कई सुविधाएं और अवसर मिलते हैं, लेकिन नगरीय क्षेत्रों में रहने के अपने नुकसान भी हो सकते हैं, जैसे कि प्रदूषण, यातायात की समस्याएं और उच्च जीवनयापन की लागत।

VI. समस्या कथन

"जौनपुर जिले के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

VI.I. अध्ययन का उद्देश्य

पिछड़ी जाति के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

VI.II. शोध परिकल्पना

पिछड़ी जाति के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

VI.III. न्यादर्श

जौनपुर जनपद में अवस्थित महाविद्यालय की सूची से स्नातकोत्तर स्तर के महाविद्यालयों को यादृक्षिक चयन विधि द्वारा चयनित किया गया है।

250 छात्र व छात्राओं कों न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। (143 ग्रामीण छात्र-छात्राएं और 107 नगरीय छात्र-छात्राएं)

VI.IV. न्यादर्श निर्धारण विधि

शोध कार्य प्रदत्त संकलन के लिए उद्देश्यपूर्ण गुच्छ प्रतिचयन विधि के द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

VII. सांख्यिकीय तकनीक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

i. मध्यमान
ii. मानक विचलन
iii. मानक त्रुटी
iv. क्रांतिक अनुपात (T-test)

इन सांख्यिकी विधियों का संक्षेप में आगे वर्णन लिया गया है।

VII.I. मध्यमान

मध्यमान वह प्राप्तांक है जो समस्त प्राप्तांकों के योग को प्राप्तांकों की संख्या से

भाग देने पर प्राप्त होता है।इसे अंकगणितीय औसत भी कहते हैं। इसके दोनों ओर विचलन समान होते हैं। यह सभी इकाइयों का प्रतिनिधित्व करता है इसको केन्द्रीय प्रवृत्ति का सबसे सर्वश्रेष्ठ मान भी कहते है। इसका सूत्र निम्नलिखित है।

सूत्र - $M = \frac{\Sigma X}{N}$

जहाँ M = मध्यमान

ΣX = इकाईयों का योग

N= इकाईयों की संख्या

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उपरोक्त सूत्र का प्रयोग किया गया है।

VII.II. मानक विचलन

विचलनशीलता के लिए सबसे अधिक प्रयोग में आने वाला गुणांक मानक विचलन है। यह सभी प्राप्तांकों के मान के ऊपर आधारित होता है। इसी को ही प्रमाणिक विचलन भी कहा जाता है। सभी प्राप्तांकों के उनके मध्यमान से लिये गये विचलनों के वर्गों के औसत के वर्गमूल को मानक विचलन कहते हैं। इसका मान सदैव धनात्मक होता है। मानक विचलन को S.D. या σ (ग्रीक अक्षर सिग्मा) से दर्शाते हैं।

इस शोध प्रबंध में इस सूत्र का प्रयोग किया गया है जो इस प्रार से है।

$$S.D. = \frac{\Sigma(X-M)2}{N}$$

जहाँ X = प्राप्तांक

M = मध्यमान

$\Sigma(x-M)^2$ = विचलनों के वर्गों का योग

N = प्राप्तांकों की कुल संख्या

VII.III. मानक त्रुटि

मानक त्रुटि एक सांख्यिकीय अवधारणा को संदर्भित करती है जो उस सटीकता का परीक्षण करती है जिसकी एक नमूना वितरण जनसंख्या का वर्णन करने के लिए मानक विचलन का उपयोग करता है। आंकड़ों में, एक नमूना माध्य जनसंख्या के वास्तविक माध्य से विचलित हो जाएगा यह विचलन माध्य मानक त्रुटि है। इसलिए, सांख्यिकीय नमूना जनसंख्या का औसत मानक विचलन एक आंकड़े की मानक त्रुटि (एस.ई.) है।

मध्यमान मानक त्रुटी का सूत्र निम्न है -

SE_M अथवा **σ_M** = $\frac{\sigma}{\sqrt{n}}$

σ = मानक विचलन ।

N = प्रतिदर्श की संख्या ।

VII.IV. T-Test(टी-परीक्षण)

दो प्रतिदर्श मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए टी-परीक्षण (t-Test) का प्रयोग किया जाता है। टी-परीक्षण वास्तव में दो मध्यमानों के अन्तर तथा इस अन्तर की मानक त्रुटि का अनुपात होता है। मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करते समय धन (+) अथवा ऋण (-) के चिन्ह का महत्व नहीं होता है। इसलिए इसे $t = \frac{M_1 \approx M_2}{\sigma D}$ या $t = \frac{D}{\sigma_D}$ में लिखते है।

दो मध्यमानों के बीच मानक त्रुटी ज्ञात करने का सूत्र $t = \frac{M_{1-}M_2}{\sqrt{\frac{S_1^2}{N_1}+\frac{S_2^2}{N2}}}$

यदि किसी समूह में विद्यार्थियों या किसी इकाई की संख्या 30 से कम होती है तो वहाँ पर t-test का प्रयोग करते है इसका सूत्र निम्न है -

$$\frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{S_1^2}{N_{1-1}}+\frac{S_2^2}{N_{2-2}}}}$$

यदि समूह में किसी इकाई या विद्यार्थियों की संख्या 30 से अधिक होती है तो वहाँ C.R. test का प्रयोग करते है। इसको क्रांतिक अनुपात भी कहते है।

इसका सूत्र इस प्रकार है-

$$t = \frac{M_{1-}M_2}{\sqrt{\frac{S_1^2}{N_1}+\frac{S_2^2}{N2}}}$$

VIII. सार्थकता स्तर

t-test और C.R. test का परीक्षण हम सार्थकता स्तर 0.05 और 0.01 स्तर पर ही देखते है। t-test और C.R. t-test में परीक्षण की दिशा ज्ञात होती है तो वहाँ पर एक पुच्छिय (One Tailed test) और इसका सार्थकता स्तर 0.05 पर 1.66 और 0.01 स्तर पर 2.33 से अधिक होने पर सार्थक और उससे कम होने पर असार्थक माना जाता है। यदि दिशा ज्ञात नहीं है, तो उस स्थिति में द्विपुच्छिय परीक्षण (Two Tailed test) का प्रयोग करते है। इसमें सार्थकता स्तर 0.05 के लिए 1.96 और 0.01 के लिए 2.58 से अधिक होने पर सार्थक और कम होने पर असार्थक माना जाता है।

उपरोक्त के आधार पर परिकल्पनाओं का भी परीक्षण कर सकते है।

IX. शोध –उपकरण

शोध उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कुल दो प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है, जिनका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है।

(1) आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ती मापनी (पांडेय) 1984.

(2) सामान्य मानसिक योग्यता (बुद्धि) परीक्षा, जोशी 1956.

परिकल्पना संख्या - 01

पिछड़ी जाति के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। का सत्यापन

GROUP	N	MEAN	SD	SEM	MEDIAN	t-STATISTIC	Df
MA (STUDENT RURAL)	143	132.11	13.57	1.13	130	0.35	248 सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से कम है।
MA (STUDENT URBAN)	107	132.76	15.85	1.53	132		
DIFFERANCE	-	-0.65	-	1.86	-		
OVERALL	250	132.39	14.57	0.92	130.5		

तालिका संख्या -1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति कला स्नातकोत्तर स्तर (ग्रामीण) के छात्रों एवं छात्राओं का आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 132 .11 एवं 13.57 है। तथा पिछड़ी जाति कला स्नातकोत्तर स्तर (नगरीय) के छात्रों एवं छात्राओं का आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 132.76 एवं 15.83 है। आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के माध्य में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान 0.35 है। जो .05 सार्थकता स्तर एवं 248 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना "पिछड़ी जाति के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है" को .05 सार्थकता एवं 248 स्वतंत्रांश पर स्वीकृत की जाती है।

X. निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि पिछड़ी जाति के स्नातकोत्तर स्तर कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं का अधिवास (ग्रामीण एवं नगरीय) के आधार पर आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह स्वीकृत किया गया है।

XI. शैक्षिक निहितार्थ

पिछड़ी जाति के छात्रों के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि के तरीकों का अनुसंधान करने से निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं:-

1. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** अनुसंधान से पता चलता है कि पिछड़ी जाति के छात्रों को शिक्षा के अवसरों में वृद्धि के लिए क्या तरीके अपनाए जा सकते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।
2. **शिक्षा की पहुंच में वृद्धि:** अनुसंधान से पता चलता है कि पिछड़ी जाति के छात्रों तक शिक्षा की पहुंच कैसे बढ़ाई जा सकती है, जिससे अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त कर सकें।
3. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** अनुसंधान से पता चलता है कि पिछड़ी जाति के छात्रों में आत्मविश्वास की कमी के प्रभावों को कैसे कम किया जा सकता है, जिससे छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ सके।

4. **शैक्षिक असमानता में कमी:** अनुसंधान से पता चलता है कि पिछड़ी जाति के छात्रों के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि के तरीकों को अपनाकर शैक्षिक असमानता को कम किया जा सकता है।
5. **शिक्षा नीति में सुधार:** अनुसंधान के निष्कर्षों का उपयोग शिक्षा नीति में सुधार के लिए किया जा सकता है, जिससे पिछड़ी जाति के छात्रों के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि हो सके।

इन शैक्षिक निहितार्थों से पता चलता है कि पिछड़ी जाति के छात्रों के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि के तरीकों का अनुसंधान करना शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस०पी० (2015), अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि। शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद- 211002.
2. दोषी, एस० एल० (2015), आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, नई दिल्ली।
3. योगेन्द्र सिंह (1973), माडर्नाइजेशन आफ इण्डियन एडिशन, थामस प्रेस इण्डिया प्रा ० लि० दिल्ली।
4. आर०एस०पाण्डेय (1988), आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति मापनी, मैनुवल रूपा सायिकोलाजिकल सेन्टर, वाराणसी।
5. जोशी मोहनचंद्र,(1981) मैनुवल आफ डायरेक्शन एण्ड रिवाइज्ड नार्मस फार टेस्ट आफ जनरल मेण्टल, रूपा सायिकोलाजिकल सेण्टर, वाराणसी।
6. सोशल रिसर्च फाउंडेशन, **http://www-socialresearchfoundation.com,25-11-2023, Oldgrt.lbp.world**
7. **https://scholar.google.com.**